पद ११६

(राग: कानडा जिल्हा - ताल: त्रिताल)

राम होउनि राम गारे। रामासी शरण रिघा रे।।ध्रु.।। कोण कैंचा हें विचारा। नका कर्म करूं व्यभिचारा।।१।। हा दुस्तर भव हराया। तुम्हि जोडा सखा गुरुराया।।२।। म्हणे माणिक निज राम पहावा। तयालागीं हृदयींच जपावा।।३।।